ISSN: 2455 - 927X

EIJO: Journal of Humanities, Social Affair, Management and Innovative Research (EIJO– JHSAMIR)

Einstein International Journal Organization (EIJO)

Available Online at: www.eijo.in

Volume – 3, Issue – 1, January – February - 2018, Page No. : 01 - 05

बौद्ध धर्म और विश्व शांति (Budh Dharm Aur Vishva Shanti)

डॉ. संजय बुन्देला

मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय ,जयपुर ,राजस्थान (भारत)

सारांश – धर्म समाज में रहने के नियमों का एक वृहत् रूप है। धर्म हमारी भौतिक और अभौतिक संस्कृति का सर्वोच्च निर्माण है। विश्व में प्रत्येक ज्ञात समाज में धर्म का कोई ना कोई प्रकार अवश्य ही विद्यमान रहा है। विश्व के प्रमुख धर्मों में बौद्ध धर्म अहिंसा और शांति का आधार है। बौद्ध धर्म शैक्षिक मानव जीव के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में लोक कल्याण की दीक्षा देता है। बौद्ध धर्म विश्व के सभी धर्मों में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इस धर्म ने मानव लोक कल्याण की भावना को जन्म दिया और शान्ति का उपदेश देकर सबसे पहले पंचशील के विषय में अवगत कराया। लोगों को समता–करुणा–प्यार के साथ रहना सिखाया। बौद्ध धर्म सुखमय जीवन बिताने का मार्ग प्रशस्त करता है।

सतत् विश्व शांति की राह में सबसे बड़ी चुनौती ऐसी मानसिकता है जिसकी जड़ों में घृणा और हिंसा बसी है, और यह अनिवार्य रूप से राष्ट्रों के बीच संघर्ष से उपजी हुई नहीं है। यह ऐसी मानसिकता, विचारधारा, संस्थाओं और उपकरणों से है जिनकी जड़ों में घृणा और हिंसा के विचार भरे हुए हैं। भगवान बुद्ध का संदेश आज 21वीं सदी में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वह ढाई सहस्राब्दि पहले था। संसार में मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। यह लोगों को शांति का संदेश देता है। मानवता का पाठ पढ़ाता है। कई राष्ट्र बौद्ध धर्म को तेजी के साथ अपना रहे हैं। हिंसा से दूर होते चले जा रहे हैं। इन राष्ट्र में शांति कायम हो चुकी है। विकास के पथ पर भी तेजी के साथ अग्रसर हैं। करुणा, दया और परोपकार की भावना को लेकर आगे बढ़ने से लोग बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हो रहे हैं।

मुख्यशब्द– बौद्ध धर्म, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्रों.

बौद्ध धर्म का परिचय

बौद्ध धर्म का शान्ति से अटूट सम्बन्ध भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। बौद्ध धर्म के 2557 वर्ष के इतिहास में जबकि यह सम्पूर्ण पृथ्वी के चतुर्थ भाग से अधिक प्रदेश में फैल गया, काफी श्रम साध्य, गंवेषण करने पर भी स्थायी और अल्प महत्व के कुछ एक उदाहरण ही मिल सकेंगे जबकि बल का प्रयोग किया गया हो। बौद्ध धर्म के इतिहास का एक भी पृष्ठ ऐसा नहीं है जो रक्त रंजित हो। बौद्ध धर्म के पास केवल एक ही तलवार है प्रज्ञा की तलवार और उसका एक ही शत्रु है अज्ञान। यह इतिहास का साक्ष्य है, जिसका विरोध नहीं किया जा सकता। बौद्ध धर्म और विश्व शान्ति का सम्बन्ध कार्य कारण का सम्बन्ध है। बौद्ध धर्म के प्रवेश से पूर्व तिब्बत, एशिया का सबसे बलवान सैनिक देश था। वर्मा, स्याम और कंबोडिया का पूर्वकालीन इतिहास बतलाता है कि यहां के निवासी अत्यन्त युद्ध प्रिय और हिंसात्मक स्वभाव के थे। मंगोल लोगों ने एक बार संपूर्ण ऐशिया को ही नहीं भारत, चीन, ईरान और अफगानिस्तान को भी रौंद डाला था और यूरोप के दरबाजों पर भी वे जा गरजे थे। जापान की सैनिक भावना को बौद्ध धर्म की पंद्रह शताब्दियां भी अभी पूरी तरह परास्त नहीं कर सकी हैं। संभवतः भारत और चीन के अपवादों को छोडकर एशिया के प्रायः अन्य सब राष्ट्रों के लोग मूलतः हिंसा प्रिय थे। बाद में उनमें जो शांति प्रियता आई वे बौद्ध धर्म के शांतिवादी उपदेशों के प्रभाव स्वरूप ही थी। इस प्रकार बौद्ध धर्म और शांति का संबंध आकस्मिक न होकर अनिवार्य है।

विश्व में बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म आबादी 48.8 करोड़ से 53.3 करोड़ (विश्व की जनसंख्या में 9 प्रतिशत से 10 प्रतिशत) भी बताई जाती है। भारत में बौद्ध धर्म अल्पसंख्यक है, जबकि भारत में इस विश्व धर्म का उदय हुआ था। परंतु एशिया में बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म बना रहा। 2010 में 1.07 अरब से 1.22 अरब जनसंख्या के साथ चीन बौद्धों की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है, चीन की कुल आबादी में 80 प्रतिशत से 91 प्रतिशत बौद्ध अनुयायी है।

ज्यादातर चीनी बौद्ध महायान सम्प्रदाय के अनुयायी है। दुनिया की 65 प्रतिशत से 70 प्रतिशत बौद्ध आबादी चीन में रहती है। पूर्वी बौद्ध धर्म (महायान) के 150 करोड़ अनुयायी है।

दक्षिणी बौद्ध धर्म (थेरवाद) के 23.1 करोड़ अनुयायी है।

उत्तरी बौद्ध धर्म (वज्रयान) के 5 करोड़ अनुयायी है।

भारतीय बौद्ध धर्म (नवयान) के 5 करोड़ से 7 करोड़ अनुयायी है।

करोड़ो अतिरिक्त बौद्ध एशिया के बाहर पाए जाते हैं।

अधिकतम बौद्ध जनसंख्या वाले देश

संपूर्ण विश्व में लगभग 1.8 अरब (180 करोड़) बौद्ध हैं। इनमें से लगभग 70 प्रतिशत से 75 प्रतिशत महायानी बौद्ध और शेष 25 प्रतिशत से 30 प्रतिशत थेरावादी, नवयानी (भारतीय) और वज्रयानी बौद्ध है। महायान और थेरवाद (हीनयान), नवयान, वज्रयान के अतिरिक्त बौद्ध धर्म में इनके अन्य कई उपसंप्रदाय या उपवर्ग भी हैं परन्तु इन का प्रभाव बहुत कम है। सबसे अधिक बौद्ध पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों बहूसंख्यक के रूप में रहते हैं। दक्षिण एशिया के दो या तीन देशों में भी बौद्ध धर्म बहुसंख्यक है। एशिया महाद्विप की लगभग आधी से ज्यादा आबादी पर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव है। महाअमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अफ़्रीका और यूरोप जैसे महाद्विपों में भी करोडों बौद्धों के समुदाय रहते हैं। विश्व में लगभग 18 से अधिक देश ऐसे हैं जहां बौद्ध बहुसंख्यक या बहुमत में हैं। विश्व में कई देश ऐसे भी हैं जहां की बौद्ध जनसंख्या के बारे में कोई विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध नहीं है।

बौद्ध धर्म और अहिंसा

बौद्ध धर्म में अहिंसा पर आग्रह इसीलिए किया जाता है क्योंकि हिंसा को सम्यक् माना ही नहीं जा सकता। वस्तुतः 'हिंसा' तो अविद्या या हम कहें–'तृष्णा' से पैदा होती है जिसके कारण हम वास्तविक स्वरूप के ज्ञान से भटक जाते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि अष्टांगिक–मार्ग व प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध–दर्शन के मूल सिद्धांत हैं,जो सार्वभौम सिद्धांत हैं। दूसरी बात, बौद्ध धर्म में सक्रिय अहिंसक सभ्यता पर बल है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन का महाकरुणा का सिद्धांत–अहिंसाभाव का उत्कृष्ट उदहारण है। महाभारत की ओर मुड़कर देखें तो वहां भी शील की काफी विवेचना है। बौद्ध धर्म में भी शील, समाधि और प्रज्ञा, बौद्धों की तीन शिक्षाओं में शामिल है। शील की गहन मीमांशा बाद में की जायेगी किन्तु बौद्ध धर्म में शील के जरिये अहिंसक आचरण को पुनर्जीवित किया है स्वयं बुद्ध ने और उनके अनुयायियों द्वारा भी। थेरवादी परंपरा में शील के साथ यदि महायान परंपरा का अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि तथागत ने धर्म को अहिंसा कहा है। बौद्ध धर्म की यह शिक्षा वास्तव में उस संकल्प का आह्वान है जिससे अहिंसक सभ्यता का सूत्रपात होता है। निःसंदेह बुद्ध से प्रभावित सम्राट अशोक ने बलिप्रथा और भोजन के लिए पशुओं की हत्या पर रोक लगाई। उसने उपचार व्यवस्था के इंतजाम किए, बरगद तथा आम के पेड़ लगवाए, कुएँ खुदवाए और आनंदगृह के जरिये मनुष्यों और जीव–जंतुओं के लिए कल्याण के काम भी किए। ये बौद्ध धर्म का ही प्रभाव था कि अशोक ने केवल खुद ही नहीं अपितु अपने बेटे और बेटी को भी बौद्ध शिक्षाओं के प्रसार का जिम्मा सौंपा।

धम्मपद में हिंसा के औचित्य पर प्रश्न खड़ा किया गया है। बुद्ध का मानना था कि सभी प्राणी दंड से डरते हैं और सबको जीवन प्रिय है इसलिए सबको अपने समान समझकर न किसी की हिंसा करें और न किसी को हिंसा करने के लिए प्रेरित करें।

कंबोडिया में शांति–स्थापना के लिए 1992 में महाघोषानंद ने धर्मयात्रा का प्रवर्तन किया था। यदि कविता की व्याख्या में जाएं तो इन बौद्ध भिच्छुओं और बौद्ध अन्तश्चेतानाओं से एक बात साफ़ झलकती है कि उनकी शिक्षाओं तथा अहिंसात्मक उपायों को लागू करने बल दिया जाय तो एक सकारात्मक समाज स्थापित हो जायेगा।

बौद्ध धर्म और विश्व शांति

बुद्ध ने देखा कि जीवन का उद्देश्य ही सुख है। उन्होंने यह भी देखा कि जहाँ अज्ञान जीवों को अन्तहीन कुंठा और दुख में बाँधता है, प्रज्ञा मुक्त करती है। आधुनिक प्रजातंत्र इस सिद्धांत पर आधारित है कि सभी मनुष्य तत्वतः समान हैं, कि हममें से प्रत्येक को जीवन, स्वतंत्रता और सुख का समान अधिकार है। बौद्ध मत भी मानता है कि मनुष्यों को गरिमा का अधिकार है, कि मानव परिवार के सभी सदस्यों को स्वाधीनता का बराबर और अहस्तांतरणीय अधिकार है, केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के संदर्भ में नहीं बल्कि भय और अभाव से मुक्ति के आधारभूत स्तर पर भी।

© 2018 EIJO, All Rights Reserved

चाहे हम धनवान हों या निर्धन, शिक्षित हों या अशिक्षित, किसी एक देश के हों या दूसरे के, एक धर्म के हों या दूसरे के, इस विचारधारा को या किसी अन्य को मानते हुए, हममें से प्रत्येक सभी की तरह केवल एक मनुष्य है। न केवल हम सभी सुख चाहते हैं और पीड़ा से बचते हैं बल्कि हममें से प्रत्येक को इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का समान अधिकार है।

बुद्ध ने जो संस्था स्थापित की वह था संघ, या भिक्षु समुदाय, जो अधिकांश रुप से लोकतांत्रिक ढंग से चलता था। इस समुदाय के भीतर व्यक्ति समान थे, फिर चाहे उनकी सामाजिक श्रेणी या जाति मूल कुछ भी हो। उनकी स्थिति में थोड़ी सी भिन्नता मात्र सन्यास ग्रहण करने की वरिष्ठता पर निर्भर थी। मुक्ति या संबोधि के रूप में प्रकट व्यक्तिगत स्वतंत्रता समूचे समुदाय का प्राथमिक लक्ष्य था, और ध्यान में मन को परिष्कृत करके प्राप्त की जाती थी। फिर भी, दैनिक जीवन के सम्बन्ध, दूसरों के प्रति उदारता, सहानुभूति और कोमलता के आधार पर चलाए जाते थे। अनिकेत जीवन जी कर भिक्षु संपत्ति की चिंताओं से खुद को असंपृक्त रखते थे परन्तु वे संपूर्ण एकाकीपन में नहीं जीते थे। अन्न के लिए भिक्षाटन की उनकी परम्परा लोगों पर उनकी निर्भरता के उनके अनुभव को सशक्त ही करती थी। समुदाय के भीतर निर्णय मतदान से किए जाते थे और मतभेदों को सर्वानुमति से सुलझाया जाता था। इस तरह संघ सामाजिक समानता, संसाधनों को साझा करने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रारूप का कार्य करता था।

बौद्ध मत अनिवार्यतः एक व्यावहारिक सिद्धांत है। मानवीय दुख की आधारभूत समस्या को संबोधित करते हुए यह किसी एक समाधान पर बल नहीं देता। यह पहचान करते हुए कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं, स्वभावों और क्षमताओं में बहुत भिन्न हैं, यह स्वीकार करता है कि शांति और सुख के कई मार्ग हैं। एक आध्यात्मिक समुदाय के रूप में इसकी एकता भ्रातृत्व और भगिनीत्व के जोड़ने वाली भावना से उत्पन्न हुई है। बौद्ध धर्म बिना किसी केन्द्रीकृत सत्ता के ढाई हजार साल से चला आया है। अध्ययन और अभ्यास से बार बार अपने को नवीन करते हुए, बुद्ध की शिक्षाओं में अपनी जड़ों को रखे, यह विभिन्न रूपाकारों में पनपा है। इस तरह की बहुलतावादी सोच, जिसमें स्वयं व्यक्ति ही उत्तरदायी हैं, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के बिलकुल अनुरूप है।

हम सब स्वतंत्रता की कामना करते हैं, पर जो चीज मनुष्यों को अलग बनाती है वह है बुद्धि। पर स्वतंत्र मनुष्यों के रूप में हम अपनी अद्वितीय बुद्धि के उपयोग से स्वयं को और अपने विश्व को समझने का प्रयास कर सकते हैं। बुद्ध ने स्पष्ट कर दिया था कि उनके अनुयायी स्वयं उनकी बातों को सुन कर जस का तस न मान लें बल्कि उनका परीक्षण करें, जाँच करें जैसे एक सुनार सोने की गुणवत्ता की करता है। पर यदि हमें अपने विवेक और रचनात्मकता का उपयोग करने से रोका जाता है तो हम मनुष्य होने का एक आधारभूत गुण खोते हैं। इसलिए, लोकतंत्र जो राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता देता है वह अतीव मूल्य और महत्त्व का है।

कोई भी शासनतंत्र संपूर्ण नहीं है, लेकिन प्रजातंत्र हमारे आधारभूत मानव स्वभाव के सबसे निकट है। यह वह अकेली स्थिर आधारशिला भी है जिस पर एक न्यायपूर्ण और मुक्त वैश्विक राजनीतिक ढाँचा बनाया जा सकता है। इसलिए यह हम सब के हित में है कि हममें से जो लोकतंत्र का आनंद उठा रहे हैं वे हर मनुष्य के इसका लाभ उठाने के अधिकार का क्रियात्मक समर्थन करें।

यद्यपि साम्यवाद ने परोपकार सहित, कई उदात्त आदर्शों की चर्चा की, परन्तु उसके सत्तारूढ़ अभिजनों की अपने विचारों को थोपने का प्रयास बहुत ही विनाशकारी साबित हुआ। इन सरकारों ने अपने समाजों को नियंत्रित करने और अपने नागरिकों को सार्वजनिक हित के लिए काम करने हेतु प्रवृत्त करने में बहुत अधिक प्रयास किए। पिछले दमनकारी शासनों पर काबू पाने के लिए प्रारंभ में कठोर संगठन की आवश्यकता रही होगी। पर एक बार उस लक्ष्य की प्राप्ति पर एक सच्चा सहकारी समाज के निर्माण के लिए ऐसी कठोरता अधिक योगदान नहीं कर सकती थी। साम्यवाद पूर्णरूप से इसलिए असफल हुआ क्योंकि वह अपने विश्वासों को बढ़ावा देने के लिए बल पर निर्भर था। अंततः मानव प्रकृति साम्यवाद–जनित पीड़ा को सहने में असमर्थ रही।

पाशविक बल, चाहे जितनी दृढ़ता से लगाया जाए, स्वतंत्रता की आधारभूत मानवीय इच्छा को नहीं दबा सकता। पूर्वी यूरोप के शहरों में सड़कों पर उतर आने वाले लाखों लोगों ने यही सिद्ध किया। उन्होंने केवल स्वतंत्रता और प्रजातंत्र की मानवीय आवश्यकता को व्यक्त किया। उनकी माँगों का किसी नई विचारधारा से कोई सम्बन्ध न था, वे केवल स्वतंत्रता की अपनी गहन कामना व्यक्त कर रहे थे। जैसा साम्यवादी व्यवस्थाओं ने मान लिया था, लोगों को खाना, मकान और कपड़े दे देना ही पर्याप्त नहीं है। हमारी अंतरतम प्रकृति की आवश्यकता है कि हम स्वतंत्रता की अमूल्य हवा में साँस लें।

© 2018 EIJO, All Rights Reserved

पूर्व सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप की शांतिपूर्ण क्रांतियों ने हमें कई महान शिक्षाएँ दी है। एक है सत्य का मूल्य। लोग किसी व्यक्ति या किसी तंत्र द्वारा धमकाया जाना, झूठ बोला जाना या ठगा जाना पसंद नहीं करते। ऐसे काम आत्यंतिक मानव चेतना के विरुद्ध हैं। इसलिए, वंचना और बल–प्रयोग का उपयोग करने वाले भले ही अल्पावधि में बहुत अधिक सफलता पा लें किन्तु अंततः वे उखाड़ फेंके जाएंगे।

हाल के बहुत के सफल मुक्ति आंदोलन लोगों की सबसे आधारभूत भावनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति पर खड़े हुए हैं। यह इस बात का अनमोल स्मरण कराता है कि हमारे अधिकांश राजनैतिक जीवन में सत्य का अब भी गंभीर रूप से अभाव है। विशेषतः अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्वाह में हम सत्य का बहुत कम सम्मान करते हैं। अनिवार्यतः, दुर्बल राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा नचाए और दबाए जाते हैं, वैसे ही जैसे अधिकतर समाजों के दुर्बल वर्ग अधिक समृद्ध और शक्तिशाली वर्गों के हाथों कष्ट पाते हैं। अतीत में, सत्य की सीधी–सरल अभिव्यक्ति को अव्यावहारिक कह कर खारिज कर दिया जाता रहा है, पर पिछले इन कुछ वर्षों ने सिद्ध किया है कि यह मनुष्य के चित्त की एक जबर्दस्त शक्ति है, और परिणामतः इतिहास को आकार देने की भी।

वर्तमान में हम पाते हैं कि विश्व और छोटा हो गया है और विश्व के लोग लगभग एक समुदाय के बन गए हैं। हम अपने समक्ष खड़ी गंभीर समस्याओं के कारण भी एक दूसरे के समीप खिंचे जा रहे हैं जनसंख्या वृद्धि, घटते प्राकृतिक संसाधन और एक पर्यावरणीय संकट जो हम सबके इस छोटे से ग्रह पृथ्वी पर अस्तित्व के आधार को ही खतरे में डाल रहा है। बौद्ध धर्म इस समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए असली कुंजी है। यह विश्व शांति, प्राकृतिक संसाधनों के समतापूर्ण उपयोग और पर्यावरण की सही देखरेख का सर्वश्रेष्ठ आधार है।

बौद्ध नीति नई विश्व व्यवस्था की सबसे सशक्त आधारशिला केवल वृहत्तर राजनैतिक और आर्थिक गठबंधन ही नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्रेम और करुणा का सच्चा अभ्यास भी है। बौद्ध नीति के अनुसार जितने अधिक राष्ट्रों या व्यक्तियों के रूप में दूसरों पर निर्भर होंगे उतना अधिक उनके कल्याण को सुनिश्चित करना हमारे अपने हित में होगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अनुसार कि भगवान बुद्ध का संदेश आज 21वीं सदी में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वह ढाई सहस्राब्दि पहले था। प्रधानमंत्री ने कहा, हमारा क्षेत्र सौभाग्यशाली है कि उसने दुनिया को बुद्ध और उनके उपदेश जैसे अमूल्य उपहार दिये। उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म और उसके विभिन्न पंथ ''हमारे प्रशासन, संस्कृति और सिद्धांतों'' में गहरी पैठ रखे हुए हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि बौद्ध धर्म न केवल भारत का हितसाधन कर सकता है, बलकि वैश्विक घटनाक्रम के इस दौर में पूरे विश्व का हितसाधन कर सकता है। बौद्ध धर्म विश्व शांति के लिए बेजोड़ है और बौद्ध धर्म के अनुयायियों को यह समझना चाहिए कि यह न केवल अपने–आपको स्वतंत्र करने के लिए काम करेगा, बल्कि सामान्य रूप से यह आपके देश और विश्व के उन्नयन का प्रयास करेगा।

निष्कर्ष

इस सदी में सभ्यता द्वारा तीव्र प्रगति के बावजूद, हमारी वर्तमान दुविधा का सबसे तत्कालीन कारण मात्र भौतिक विकास पर हमारा अनुचित ज़ोर है। उसका पीछा करने में हम इतने डूब गए हैं कि अनजाने में ही, हम सबसे आधारभूत मानवीय आवश्यकताओं प्रेम, दया, सहयोग और सहानुभूति को पोषित करना भुला बैठे हैं। यदि हम किसी से परिचित नहीं या किसी व्यक्ति या समूह विशेष से जुड़ा हुआ अनुभव नहीं करते तो हम उनकी आवश्यकताओं की सरलता से उपेक्षा कर देते हैं। वर्तमान परिस्थितियों में, बौद्ध धर्म के अहिंसा और शांति नीति के अतिरिक्त कोई दूसरा हमारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता।

आज आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, परमाणु शस्त्रीकरण, वैश्विक मंदी, बेरोज़गारी आदि की भयावह सम्भावनाओं के बीच लोग अपने आप को अक्सर महत्वहीन, अशक्त और अकेला पाते हैं। इन समस्याओं का समाधान और विश्व शांति बौद्ध धर्म नीति और अहिंसा से ही संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अम्बेडकर, डॉ.बी.आर., 'भगवान बुद्ध और उनका धर्म', पृ. संख्या 135

2. धर्मरत्न, भिक्षु उरूवल, अनुवादक, डॉ. प्रफुल्ल चन्द्र, 'भगवान बुद्ध और उनका संदेश', पृ. संख्या 112

3. Journal of Global Buddhism, Article by Jørn Borup, Department of Study of Religion at University of Aarhus, Denmark. 2008, based on research from 2005, p. 110

4- International Religious Freedom Report 2007 - Hong Kong, p. 95-96

© 2018 EIJO, All Rights Reserved

5- Michael Martin (2007). *The Cambridge companion to atheism*. Cambridge University Press, p. 85-86

6. आचार्य नरेन्द्र देव, 'बौद्ध धर्म दर्शन', पृ. संख्या 45

7. आचार्य नरेन्द्र देव, 'विश्व में थेरवाद बौद्ध धर्म', पृ.संख्या 88

8. शेल्डन, पोलक, 'एक्सियल सिविलाइजेशन एण्ड वर्ल्ड हिस्ट्री' पृ. 231

9. राजीव मल्होत्रा, 'ब्रेकिंग इंडिया', सेंट पिटर्सबर्ग पब्लिकेशन, पृ. संख्या 335

10. राजीव मल्होत्रा, 'बैटल फॉर संस्कृत' सेंट पिटर्सबर्ग पब्लिकेशन, पृ. संख्या 114

© 2018 EIJO, All Rights Reserved